शास्त्री, प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र
जयद्रथ-वध, खण्ड काव्य
कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

Date: ______ Page: ______

अवलोक सम्मुख पार्थ ने गुरु को प्रणाम किया अहा,
आशीष दे आचार्य ने उनसे प्लुत-स्वर में कहा-
"देकर परीक्षा आज अर्जुन! तुष्ट तुम मुझको करो,
आओ दिखाओ हस्त कौशल यह समर सागर तरो"

भावार्थ :—

अर्जुन का रथ जिस समय कौरवों के सेना के समीप पहुँचा तो वहाँ पर उनका सामना गुरुद्रोणाचार्य से हो गया और उनमें वार्तालाप प्रारम्भ हो गया।

कवि कहता है कि अर्जुन ने गुरुद्रोणाचार्य को अपने सामने देखकर उनको प्रणाम किया। तब गुरुद्रोणाचार्य ने रुद्ध कंठ से आशीर्वाद दिया। उसके बाद द्रोणाचार्य कहने लगे हे अर्जुन आज तुम मुझको परीक्षा देकर संतुष्ट करो। आओ आज तुम अपने हाथ की कुशलता को दिखाओ और इस युद्ध रूपी सागर को पार करो।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने गुरु द्रोणाचार्य के अपने शिष्य अर्जुन के प्रति प्रेम भाव को जागृत किया है। प्रेम के कारण ही गुरु द्रोणाचार्य का कंठ रुद्ध हो जाता है।

निःसदेह गुरु-शिष्य का सम्बन्ध ही ऐसा होता है कि मिलने के बाद दोनों अपने को रोक नहीं पाते हैं। भाव पूर्ण सम्बन्ध में ऐसा प्रायः दिखाई पड़ता है। जहाँ तक अर्जुन की बात है तो वह गुरुद्रोणाचार्य का सबसे प्रिय शिष्य था। यही कारण है कि आमना-सामना होने पर वह अपनी भावना को विराम देने में असहज हो रहे हैं। कवि ने गुरु-शिष्य सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण करने में पूर्ण सफलता दिखलाई है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 05.10.20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०—पत्र
दिगंत - भाग - 2. शीर्षक - 'छप्पय'
कवि — नाभादास

भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए।
योग, यज्ञ, व्रत, दान, भजन बिनु तुच्छ दिखाए ॥
हिन्दू, तुरक, प्रमान रमैनी, सबदी, साखी।
पक्षपात नहिं बचन सबहिके हितकी भाखी ॥
आरूढ़ दशा है जगत पै, मुख देखि नाहिन भनी।
कबीर कानि राखि नहिं, वर्णाश्रम षट् दर्शनी ॥

भावार्थ :- भक्त कवि संत कबीर दास ने भक्ति विमुख धर्मों की धज्जी उड़ा दी है। उन्होंने वास्तविक धर्म को स्पष्ट करते हुए योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का बार-बार प्रतिपादन किया है। उन्होंने अपनी सबदी, साखियों और रमैनी में क्या हिन्दू और क्या तुर्क सबके प्रति आदर भाव व्यक्त किया है। कबीर के वचनों में पक्षपात नहीं है। उनमें लोक मंगल की भावना है। कबीर मुँह देखी बात नहीं करते। उन्होंने वर्णाश्रम के पोषक षट् दर्शनों की दुर्बलताओं को तार-तार करके दिखला दिया है।

भक्त कवि नाभादास का यह छप्पय छन्द संत कबीर के प्रति उनकी उदारता का दर्शन कराता है। कबीरदास ने तत्कालीन समाज को आईना दिखाने का कार्य किया है। यह सर्वविदित है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
05/11/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
निबंध माला, शीर्षक - 'गाँधीजी और मैं'

लेखक - पंडित रामनन्दन मिश्र

प्रश्न:- 'गाँधीजी और मैं' निबंध के महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करें।

उत्तर:- 'गाँधी जी और मैं' पंडित रामनन्दन मिश्र का एक संस्मरणात्मक निबन्ध है। इस निबन्ध में लेखक ने अपने संघर्ष और गाँधीजी के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्धों को अपने संस्मरण में उल्लेख किया है।

सन् 1926 में महिला सभा को सम्बोधित करने के लिए बापू दरभंगा गये थे। इस सभा में गाँधी जी और महिलाओं के बीच एक पर्दा डाला गया था। गाँधीजी इस पर्दा प्रथा के विरोध में अपने एक पत्र में कड़ी टिप्पणी की थी।

कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर रामनन्दनजी घर आये तो उनके मन में पर्दा प्रथा के विरोध की बात जोर-शोर से उठायी। उन्होंने कुछ नौजवनों को इकट्ठा किया और इस प्रथा का किस तरह विरोध किया जाए इस पर विचार विमर्श हुआ। इस प्रथा का विरोध करने के लिए रामनन्दन बाबू ने स्वयं बीड़ा उठाया। परिणाम-स्वरूप उनका अपने परिवार में ही विरोध होने लगा। उनके पूज्य पिता सहित परिवार का कोई भी व्यक्ति इस बात के लिए तैयार नहीं था कि रामनन्दन जी की पत्नी घर से बाहर निकले। बहुत दिनों तक घरवालों का उलाने-पमकाने का काम होता रहा परन्तु लेखक के ऊपर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। गाँधी जी को भी इसमें बीच-बचाव करना पड़ा। उन्होंने रामनन्दन जी की पत्नी को पढ़ाने के लिए राधा बाई तथा दुर्गाबाई को उनके घर पर भेज दिया। गाँधी जी ने रामनन्दन जी को लिखा पत्नी राजकिशोरी को साबरमती भेज दो।

लेखक का अपने परिवार वालों से घोर संग्राम छिड़ गया। मिश्रजी ने अपने पिताजी को कई पत्र भी लिखे, परन्तु कहीं से कोई बात नहीं बनी।

शेष आगे -

Date: _____ Page: _____

पंडित रामनन्दन मिश्र ने गाँधी जी संबंधित कई संस्मरणों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं- गाँधी जी अक्सर रेल के तीसरे डब्बे में यात्रा करते थे। मैं उनके साथ रहता था। गाँधी जी के लिए एक डिब्बा रिजर्व होता था। हर स्टेशन पर चन्दा की वसूली होती थी।

लेखक का कहना है कि वे राह अलग हो जाने के बाद यदि कोई दूसरा होता तो बोलता तक नहीं, किन्तु बापू में कैसी समानता थी कि उन्होंने अभी तक अपनापन नहीं छोड़ा। इसी प्रकार, बहुत सारी यादें हमारी उनके साथ जुड़ी हुई हैं। सच्चे अर्थों में गाँधी जी देश के लाखों-करोड़ो जन के प्रिय थे।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णिया